Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 11

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

19 मई 2016 ई 11 शअबान 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मरने से कुछ दिन पहले एक मुबाहिला कागज़ उसने लिखा जिस में अपना और मेरा नाम उल्लेख करके ख़ुदा तआला से दुआ की कि हम दोनों में से जो झूठा है वह हलाक हो। ख़ुदा की कुदरत है कि वह कागज़ अब कातिब के हाथ में ही था और वह कॉपी लिख रहा था कि चिराग़ दीन अपने दोनों बेटों के साथ उसी दिन हमेशा के लिए विदा हो गया। हे विद्वानो अक्ल हासिल करो।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

फिर एक और ख़ुशी का अवसर हमारे विरोधियों को आया जब चिराग़ दीन जम्मू वाला जो मेरा मुरीद था मुर्तद हो गया और स्वधर्म त्यागने के बाद मैंने पत्रिका दाफिउल बलाअ मेअयार अहले अस्फिया " में उसके बारे में ख़ुदा तआला से यह इल्हाम पाकर प्रकाशित कि वह अल्लाह तआला के प्रकोप में पीड़ित होकर मारा जाएगा तो कुछ मौलवियों ने केवल मेरी ज़िद से उसकी संगति धारण की और उसने एक किताब बनाई जिसका नाम "मिनारतुल मसीह" रखा और इस में मुझे दज्जाल करार दिया और अपना यह इल्हाम प्रकाशित किया कि मैं रसूल हूँ और ख़ुदा के रसूलों में से एक रसूल हूँ और हज़रत ईसा ने मुझे एक छड़ी दी है कि ताकि मैं इस छड़ी से दज्जाल को (यानी मुझे) हत्या करूं अत: मिनारतुल मसीह में करीब आधा यही बयान है कि यह व्यक्ति दज्जाल है और मेरे हाथ से नष्ट होगा। और बयान किया कि यही ख़बर मुझे ख़ुदा और ईसा ने भी दी है मगर अंत में जो हुआ लोगों ने सुना होगा कि यह व्यक्ति 4 अप्रैल 1906 ई को अपने दोनों बेटों के साथ प्लेग से मर कर मेरी भविष्यवाणी की पुष्टि कर गया और बड़ी निराशा से उस ने जान दी और मरने से कुछ दिन पहले एक मुबाहिला कागज़ उसने लिखा जिस में अपना और मेरा नाम उल्लेख करके ख़ुदा तआला से दुआ की कि हम दोनों में से जो झूठा है वह हलाक हो। ख़ुदा की कुदरत है कि वह कागज़ अब कातिब के हाथ में ही था और वह कॉपी लिख रहा था कि चिराग़ दीन अपने दोनों बेटों के साथ उसी दिन हमेशा के लिए विदा हो गया। हे विद्वानो अक्ल हासिल करो। यह हैं मेरे विरोधी इलहामों का दावा करने वाले जो मुझे दज्जाल ठहराते हैं। कोई व्यक्ति उनके अन्त पर विचार नहीं करता। सारांक्ष सज्जनों मौलवी साहिबान, चराग़ दीन मुर्तद के साथ देकर भी अपनी मुराद को न पहुंच सके।

फिर बाद उसके एक और चिराग़ दीन पैदा हुआ अर्थात डॉक्टर अब्दुल हकीम ख़ान। यह व्यक्ति भी मुझे दज्जाल ठहराता है और पहले चिराग़ दीन की तरह अपने प्रति रसूलूं में गणना करता है मगर पता नहीं कि पहले चिराग़ दीन की तरह मेरे मारने के लिए उसे भी हज़रत ईसा ने लाठी दी है या नहीं। * अहंकार और अभिमान तो पहले चिराग़ दीन से भी बढ़कर है और गालियां देने में भी अधिक अभ्यास है और झूठों में इस से बढ़कर कदम है। इस उग्र तबीयत मिट्टी की मुट्ठी के स्वधर्म त्यागने से भी हमारे विरोधी मौलवियों को बहुत ख़ुशी हुई। मानो एक ख़ज़ाना मिल गया। मगर उन्हें चाहिए कि इतना ख़ुश न हों और पहले चिराग़ धर्म को याद करें। वह ख़ुदा जिस ने हमेशा उन्हें ऐसी ख़ुशियों से नामुराद रखा है वही ख़ुदा अब भी है और इस की भविष्यवाणी ने जैसा कि पहले चिराग़ दीन के अन्जाम से ख़बर दी थी उसी तरह उस जानने तथा ख़बर रखने वाले ने दूसरे चिराग़ दीन अर्थात अब्दुल हकीम के अन्जाम की ख़बर दी है तो ख़ुशी का क्या स्थान है ज़रा धैर्य करें और अन्जाम देखें। और फिर आश्चर्य का स्थान है कि एक नादान मुर्तद के स्वधर्म त्यागने से इतना क्यों ख़ुशी की जाती है। ख़ुदा तआला का हम पर फज़ल है कि अगर एक दुर्भाग्य से मुर्तद होता है तो उसकी जगह हज़ार आता है।

और फिर इसके अतिरिक्त क्या किसी मुर्तद के स्वधर्म त्यागने से निष्कर्ष निकल सकता है कि वह सिलसिला जिस में यह मुर्तद नष्ट हुआ सच्चा नहीं है। क्या हमारे विरोधी विद्वानों को ख़बर नहीं कि कई बदबख़्त हज़रत मूसा के ज़माना में उन से मुर्तद हो गए थे। फिर कई लोग हज़रत ईसा से मुर्तद हुए और फिर कई बद किस्मत और दुर्भाग्यवश हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कार्यकाल में आप से मुर्तद हो गए अत: मुसलिमह कज़्ज़ाब भी मुर्तदीन में से एक था। तो अब्दुल हकीम मुर्तद के स्वधर्म त्यागने से ख़ुश होना और इस सच्चे सिलसिला के झूठा होने की एक दलील करार देना उन लोगों का काम है जो केवल मूर्ख हैं। हां ये लोग कुछ दिनों के लिए एक झूठी ख़ुशी का कारण ज़रूर हो जाते हैं। मगर वह ख़ुशी जल्द दूर हो जाती है।

यह वही अब्दुल हकीम ख़ान है जिसने अपनी किताब में मेरा नाम लेकर यह लिखा है कि एक व्यक्ति उनके दावा मसीह मौऊद होने से इन्कार करने वाला था तब मुझे ख़वाब में दिखाया गया कि यह इनकार करने वाला प्लेग से मर जाएगा। इसलिए वह प्लेग से मर गया। मगर अब ख़ुद गुस्ताखी से मुर्तद होकर गालियां देता और सख्त बुरी ज़बान करता और झूठे आरोप लगाता है क्या अब प्लेग का समय जाता रहा ?!

(हाशिया) * हज़रत ईसा ने जो मेरे कत्ल करने के लिए चिराग़ दीन को छड़ी दी पता नहीं कि यह जोश और क्रोध क्यों उनके दिल में भड़का। अगर इसलिए नाराज़ हो गए कि मैंने उनका मरना दुनिया में प्रकाशित किया है तो यह उनकी ग़लती है कि मैंने प्रकाशित नहीं किया बल्कि उसने प्रकाशित किया है जिस के प्राणी हमारी तरह ईसा भी हैं अगर शक हो तो यह आयत देखें

مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوۡلٌ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِہِ الرُّسُلُ

और यह आयत

فَلَمَّا تَوَفَّیۡتَنِیۡ کُنۡتَ اَنۡتَ الرَّقِیۡبَ عَلَیۡہِمۡ

और आश्चर्य कि जिसे वह मेरे नाश करने के लिए छड़ी देते हैं वह अपने आप ही हलाक हो जाता है यह ख़ूब छड़ी है। सुना है कि दूसरे चिराग़ दीन अर्थात अब्दुल हकीम खान ने भी मेरी मौत के बारे में कोई भविष्यवाणी पहले चिराग़ दीन की तरह की है, लेकिन पता नहीं कि इसमें कोई छड़ी का भी उल्लेख है या नहीं। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन, भाग 22, पृष्ठ 126 से 127)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

दावत इलल्लाह का महत्तव और इस के प्रमुख सिद्धान्त(भाग -2)

मुहम्मद हमीद कौसर

प्रिय पाठको !!

जमाअत अहमदिया सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सम्बन्ध रखती है। उन्हें अल्लाह तआला ने رحمۃللعالمین (सारे जहानों के लिए रहमत) बनाया है। आप के ग़ुलाम होने के कारण जमाअत अहमदिया के प्रत्येक सदस्य का परम कर्त्तव्य है की वह मुसलमानों को किसी न किसी प्रकार नर्क के मार्ग से निकाल कर स्वर्गीय मार्ग की ओर ले जाए और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उसे तब्लीग़ (प्रचार) तथा "दावत ए इलल्लाह" के महत्त्वपूर्ण दायित्व की ओर ध्यान केन्द्रित करना होगा। जमाअत के प्रत्येक सदस्य को यह कोशिश तथा इस बात का प्रण लेना होगा की वह प्रत्येक वर्ष एक मुसलमान को "नर्क के मार्ग" से निकाल कर स्वर्गीय सम्प्रदाय (जमाअत अहमदिया) में शामिल करेगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़िअल्लाहो अन्हो (दूसरे ख़लीफ़ा) फ़रमाते हैं।

"प्रत्येक अहमदी यह कसम खा ले की वह वर्ष में कम से कम "एक" अहमदी बनाएगा।"

(ख़ुत्ब: जुमअ: 8 फरवरी-15 फरवरी 1929 अल-फज़ल)

दावत-ए-इलल्लाह पवित्र क़ुर्आन के अनुसार :

अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा आप[स.अ.व.] के द्वारा प्रत्येक मुसलमान को यह आदेश दिया है कि

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ

अर्थात् हे रसूल जो तेरे रब्ब की ओर से तुझ पर उतारा गया है उसे अच्छी तरह लोगों तक पहुंचा दे। (सूर: अल माइदह-5:68)

وَ مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ

अर्थात् और बात कहने में उस से श्रेष्ठ ओर कौन हो सकता है जो अल्लाह तआला की ओर बुलाए। (सूर: हामीम अस्सजदह-41:34)

सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

فَوَا للهِ لَان يّهدى الله بک رجلاً واحداً خير لک من حمر النّعم

तेरे द्वारा एक मनुष्य का हिदायत (मार्गदर्शन) प्राप्त कर लेना उच्चकोटि के सुर्ख ऊँटों के प्राप्त हो जाने से कहीं अधिक उत्तम है। (उस समय सुर्ख ऊंट अरबों के समीप सब से मूल्यवान होते थे)।

(मुसलिम किताबुल फज़ाएल)

दावत इलल्लाह के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तड़प

हुज़ूर फ़रमाते हैं :-

"हमारे वश में हो तो हम फ़कीरों की तरह घर घर घूम कर ख़ुदा के सच्चे धर्म का प्रचार करें और इस विनाश करने वाले शिर्क (बहुदेववाद) और कुफ्र (नास्तिकता) से जो दुनिया में फैला हुआ है लोगों को बचा लें और इसी प्रचार में जीवन समाप्त कर दें। भले ही मारे जाएं।

(मलफूज़ात-सम्प्रदाय 3,पृष्ठ 391)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामसि नसरहुल्लाहो तआला (पांचवे ख़लीफ़ा) के उपदेश:

1 - विश्व को शैतान के जाल से मुक्त करायें।

अल्लाह तआला की अहमदियों पर यह कृपा है की उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत मैं शामिल होने का अवसर प्रदान किया। अल्लाह तआला की यह कृपा हम पर यह ज़िम्मेदारी डालती है कि जिस बहुमूल्य खज़ाने को हमने प्राप्त किया है उसे दूसरों तक पहुंचायें तथा उन्हें शैतान के जाल से मुक्त करायें।

(ख़ुत्ब: जुमअ: 4 जून 2004, अल फ़ज़्ल 8 जून 2004)

2- प्रत्येक अहमदी मुसलमान अल्लाह तआला का सन्देश पहुंचाने के लिए व्यस्त हो जाए

फरमाया ! "दुनिया शीघ्रता से विनाश की ओर बढ़ रही है उसको विनाश से बचाएं। क्योंकि अब अल्लाह तआला की ओर झुके बिना कोई राष्ट्र सुरक्षित नहीं। इसलिए इनको बचाने के लिए दाईयान-ए-इलल्लाह का विशेष समूह या विशेष लक्ष्य प्राप्त करने का समय नहीं है। बल्कि अपनी जमाअतों मैं ऐसी योजनाएं बनाएं जिससे प्रत्येक अहमदी अल्लाह तआला के सन्देश को पहुँचाने मैं व्यस्त हो जाए।"

(अल-फ़ज़्ल 8 जून 2004)

3-दावत इलल्लाह के लिए अपने आप को कम से कम एक या दो सप्ताह के लिए वक्फ करने की तहरीक

फ़रमाया : "विश्व मैं प्रत्येक अहमदी यह अनिवार्य कर ले की उसने वर्ष मैं एक या दो सप्ताह इस पवित्र कार्य के लिए अपने आप को समर्पित करना है।"

4-हुज़ूरअनवर نصره الله نصراعزيزا ने फ़रमाया : "राष्ट्रीय कार्य कारिणी (नैशनल मजलिस आमला) के सदस्य,जमाअतों की मज्लिस आमला के सदस्य, उप संगठनों (ज़ैली तन्ज़ीमों) की मजलिस आमला के सदस्य, प्रत्येक तब्लीग़ के लिए प्रयास करें तथा निजी सम्पर्क बनाकर सन्देश पहुंचाएं तो पचास साठ बैअतें तो इस तरह हो सकती हैं।"

दावत इलल्लाह के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत

प्रथम सिद्धांत :- प्रत्येक दाई ए इलल्लाह तब्लीग़ करने से पहले पवित्र क़ुरआन की यह दुआ बड़ी विनम्रता तथा दर्द-ए-दिल के साथ करे।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَ يَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ

(ताह: 26-29)

अर्थात् हे मेरे रब्ब ! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे तथा मेरा मामला मुझ पर आसान कर दे तथा मेरी जीभ की गिरह (गांठ) को खोल दे ताकि वह मेरी बात समझ सकें।

दूसरा सिद्धांत : अल्लाह तआला ने जब सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पवित्र कुरआन उतारना प्रारम्भ किया तो यह आदेश दिया:

وَ اَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ

अर्थात् अपने परिवार को डरा। (अश्शूर: - 215)

इस आदेश के पालन हेतु आप ने बनूअब्दुल मुतलिब को बुला कर तब्लीग़ (प्रचार)का कार्य शुरू किया। इसलिए सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस तरीके को ग्रहण करते हुए प्रत्येक अहमदी का यह कर्त्तव्य है की अपने क़रीबी तथा दूर के सम्बन्धियों, मित्रों, साथ में कार्य करने वालों को चुन कर उन्हें तब्लीग़ करे। इस कार्य में रुकावटें आ सकती हैं। परन्तु इनका सब्र और दुआ से सामना करें तथा निम्नलिखित आदेशों का पालन करें। अवश्य अल्लाह तआला इनको अपनी कृपा से दूर कर देगा।

(क) कुछ अहमदी स्त्री व पुरुष अपने ग़ैर अहमदी सगे सम्बंधियो से सम्बन्ध तोड़ लेते हैं। या वह इनसे सम्बन्ध तोड़ लेते हैं। तब्लीग़ की दृष्टि से यह बहुत हानिकारक है। इस (विचार) को किसी भी तरह समाप्त करना आवश्यक है।

(शेष.....)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

पवित्र कुरआन में नमाज़ की अदायगी की तरफ कई जगह ध्यान दिलाया गया है कहीं नमाज़ की हिफाज़त का आदेश है कहीं इस में बाकायदगी अपनाने का आदेश है कहीं अपने समय पर अदा करने का आदेश है और फिर इसके लिए समय भी बता दिए कि नमाज़ अदा के लिए अमुक अमुक समय हैं जिन पर मोमिन को पालन करना चाहिए। पाबन्दी करनी चाहिए। अतः कि नमाज़ों की अदायगी और फज़ीलत के बारे में बार-बार ख़ुदा तआला ने एक मोमिन को हिदायत फरमाई है और सबसे बढ़कर यह फ़रमाया कि मानव जन्म का उद्देश्य ही इबादत है।

हमारा सौभाग्य यह है कि हम ने इस ज़माना के इमाम को माना है जिन्होंने हमें इबादतों के सही तरीके सिखाए। हमें ज्ञान सिखाया कि किस तरह इबादतें करनी आवश्यक हैं। बार- बार प्राय कई अवसरों पर अपनी जमाअत को नमाज़ की ओर ध्यान दिलाया है। इस का विस्तार और संक्षेप बताया है। इसकी हिक्मत और ज़रूरत बताई है ताकि हम अपनी नमाज़ के महत्त्व को समझें और इसमें सुन्दरता पैदा कर सकें।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के माध्यम से नमाज़ का महत्तव और नमाज़ों की पाबन्दी और नमाज़ों में आनन्द इत्यादि मामले प्राप्त करने के बारे में बहुत महत्त्वपूर्ण उपदेश।

जो मस्जिदों के पास रहते हैं जिनके क्षेत्र हैं या अपनी-अपनी मस्जिदों में या अपने नमाज़ केंद्रों में नियमित नमाज़ अदा के लिए जाया करें। विशेष कर के फजर की अदा करने के लिए और केवल यहाँ नहीं बल्कि दुनिया के हर देश में इसके लिए कोशिश होनी चाहिए कि मस्जिदों को आबाद करें। खासकर अगर उहदेदार और जमाअत के कार्यकर्ताओं वाकफीन ज़िन्दगी इस तरफ ध्यान दें तो नमाज़ की हाज़री बहुत बेहतर हो सकती है।

यह विचार ग़लत है कि सेहत है तो सब कुछ है या अमुक अमुक काम करने से सेहत बनी रहेगी या बीमार होऊंगा तो अमुक दवा लेने से सेहत हो जाएगी। यह सब चीज़ें जो हैं यह अल्लाह तआला के हुक्म से चलती हैं और अल्लाह तआला का आदेश अगर नहीं होगा तो सब बेकार हैं। इसलिए जिस के आदेश से यह सब बातें चल रही हैं उस के आगे हमें झुकने की ज़रूरत है। उसकी इबादत की ज़रूरत है इससे संबंध बनाने की ज़रूरत है। इसलिए नमाज़ें जहां जन्म के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं वहां हमें आपदाओं और कठिनाइयों से भी बचाती हैं क्योंकि अल्लाह तआला के समक्ष झुक कर बहुत सारे काम ऐसे हैं जो असंभव प्रतीत होता हैं लेकिन अल्लाह तआला से संबंध हो तो वह संभव हो जाते हैं।

आदरणीया असग़री बेगम साहिबा पत्नी शेख रहमतुल्लाह साहिब मरहूम पूर्व अमीर जमात कराची की वफात, मरहूमा का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 15 अप्रैल 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

पवित्र कुरआन में नमाज़ की अदायगी की तरफ कई जगह ध्यान दिलाया गया है कहीं नमाज़ों की हिफाज़त का आदेश है। कहीं इस में बाकायदगी अपनाने का आदेश है कहीं इस की समय पर अदा करने का आदेश है और फिर इसके लिए समय भी बता दिए कि नमाज़ की अदायगी के लिए अमुक-अमुक समय हैं जिन पर मोमिन को पालन करना चाहिए। पाबन्दी करनी चाहिए। अतः कि नमाज़ों की अदायगी और फज़लीत के बारे में बार-बार ख़ुदा तआला ने एक मोमिन को हिदायत फरमाई है और सबसे बढ़कर यह फ़रमाया कि मानव जन्म का उद्देश्य ही इबादत है। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْن (अज़्ज़ारियात 57)

कि जिन तथा इन्सान के जन्म का उद्देश्य ही इबादत है लेकिन आदमी इस लक्ष्य को पहचानता नहीं और इससे दूर हटा हुआ है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला ने तुम्हारे जन्म का मूल उद्देश्य यह रखा है कि तुम अल्लाह तआला की इबादत करो मगर जो लोग इस मूल और प्राकृतिक उद्देश्य को छोड़कर हैवानों की तरह जीवन का उद्देश्य केवल खाना पीना और सोए रहना समझते हैं वे ख़ुदा तआला के फज़ल दूर जा पड़ते हैं और ख़ुदा तआला की ज़िम्मेदारी उनके लिए नहीं रहती।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 182 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो यह उद्देश्य है जो एक ईमान का दावा करने वाले को अपनी सारी कोशिशों से ध्यान पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि अल्लाह तआला के फज़ल के वारिस बनते रहें। अल्लाह तआला के फज़लों को प्राप्त करते रहें

और इबादत का उद्देश्य कैसे पूरा होता है इसके लिए इस्लाम ने हमें पांच बार की नमाज़ अदा करने का आदेश दिया है। एक हदीस में है कि नमाज़ इबादत का मग़ज़ (मेरुदण्ड) है तो इस मेरुदण्ड को प्राप्त करके ही हम इबादत का उद्देश्य पूरा कर सकते हैं। हमारा सौभाग्य यह है कि हम ने इस ज़माना के इमाम को माना है जिन्होंने हमें इबादतों के सही तरीके सिखाए। हमें ज्ञान सिखाया कि किस तरह इबादतें करनी आवश्यक हैं। बार-बार प्राय कई अवसरों पर अपनी जमाअत को नमाज़ की ओर ध्यान दिलाया है। इस का विस्तार और संक्षेप बताया है। इसकी हिक्मत और ज़रूरत बताई है ताकि हम अपनी नमाज़ के महत्त्व को समझें और इसमें सुन्दरता पैदा कर सकें।

इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण इस संबंध में पेश करूँगा। कई बार मौसम की तीव्रता या रातें छोटी होने के कारण विशेष रूप से फजर की नमाज़ में सुस्ती हो जाती है। सामान्य रूप में ज़ुहर असर की नमाज़ें लोग या जमा कर लेते हैं या बल्कि कुछ लोगों को मैंने देखा है काम की अधिकता के कारण से अदा सहीह तरीका से अदा ही नहीं करते। तो चाहे मौसम की तीव्रता हो रातों की नींद पूरी न होना हो काम में अधिकता हो, इसलिए लोग नमाज़ें या तो छोड़ देते हैं या फिर कई बार ऐसे भी हैं जो कई बार कहते हैं जी हम ने तीन नमाज़ें जमा कर लीं। आजकल यहाँ इन देशों में तेज़ी से नमाज़ का समय पीछे आ रहा है और अब दिखाई देता है फजर की नमाज़ पर भी कि एक डेढ़ पंक्ति की कमी होनी शुरू हो गई है। कुछ लोग जो बाहर से आए हुए हैं उनकी वजह से कभी-कभी संख्या अधिक हो जाती है लेकिन स्थानीय लोगों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। या जिनके क्षेत्र हैं इस और ध्यान देना चाहिए कि अपनी-अपनी मस्जिदों में या अपने नमाज़ केंद्रों में नियमित नमाज़ अदा के लिए जाया करें। और विशेष रूप से फजर की अदा करने के लिए और केवल यहाँ नहीं बल्कि दुनिया के हर देश में इसके

लिए कोशिश होनी चाहिए कि मस्जिदों को आबाद करें। खासकर अगर उहदेदार और जमाअत के कार्यकर्ताओं, वाकफीन ज़िन्दगी इस तरफ ध्यान दें तो नमाज़ की हाज़री बहुत बेहतर हो सकती है।

नमाज़ को नियमित और प्रावधान से पढ़ने के बारे में हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं। एक मजलिस में आपने फरमाया कि

"नमाज़ को नियमित प्रावधान से पढ़ो। कुछ लोग केवल एक ही नमाज़ पढ़ लेते हैं कि वह याद रखें कि नमाज़ें माफ नहीं होतीं। यहां तक कि पैग़म्बरों तक को माफ नहीं हुईं। एक हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक नई जमाअत आई। उन्होंने नमाज़ की माफी चाही (कि हमारी व्यस्तता है काम की अधिकता है हमें नमाज़ माफ कर दें।) आपने फरमाया कि जिस धर्म में अनुकरण नहीं वह धर्म कुछ नहीं। इसलिए इस बात को ख़ूब याद रखो और अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार अपने व्यवहार कर लो। अल्लाह तआला फरमाता है कि अल्लाह तआला के निशानों में से एक यह भी निशान है कि आसमान और ज़मीन उसके आदेश से स्थापित रह सकते हैं। कई बार वे जिनकी तबीयतें भौतिकवाद की ओर झुकी हैं। कहा करते हैं कि नेचरी धर्म अनुसरण योग्य है क्योंकि अगर सेहत के सिद्धांतों का पालन न किया जाए तो तक्वा और पवित्रता से क्या लाभ होगा।?" (दुनियादार इस बात की बहस करते है कि बहुत सारे नियम हैं उन पर अमल करना चाहिए। सेहत के बारे में जो सांसारिक नियम हैं अगर वे हों जैसे कि उन चीज़ों पर पालन करना है अगर उस का पालन नहीं करोगे सेहत नहीं होगी वह तक्वा और पवित्रता कैसे बनी रह सकता है और सिर्फ तक्वा केवल कायम रखने का क्या लाभ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "विचार योग्य है कि अल्लाह तआला के निशानों में से यह भी एक निशान है कि कई बार दवा बेकार रह जाती हैं और सेहत की हिफाज़त के कारण भी किसी काम नहीं आ सकते। न दवा काम आ सकती है न माहिर हकीम लेकिन अगर अल्लाह तआला का आदेश हो तो उलटा सीधा हो जाया करता है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 263 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: अल्लाह तआला का फज़ल असली बात है। यह विचार ग़लत है कि सेहत है तो सब कुछ है या अमुक अमुक काम करने से सेहत बनी रहेगी या बीमार होऊंगा तो अमुक दवा लेने से सेहत हो जाएगी। यह सब चीज़ें जो हैं यह अल्लाह तआला के हुक्म से चलती हैं और अल्लाह तआला का आदेश अगर नहीं होगा तो सब बेकार हैं। इसलिए जिस के आदेश से ये सब बातें चल रही हैं उस के आगे हमें झुकने की ज़रूरत है। उसकी इबादत की ज़रूरत है इससे संबंध बनाने की ज़रूरत है। इसलिए नमाज़ें जहां जन्म के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं वहां हमें आपदाओं और कठिनाइयों से भी बचाती हैं क्योंकि अल्लाह तआला के समक्ष झुक कर बहुत सारे काम ऐसे हैं जो असंभव प्रतीत होते हैं लेकिन अल्लाह तआला से संबंध हो तो वह संभव हो जाते हैं। इसलिए जो कुछ होता है अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार होता है। इसलिए अल्लाह तआला के फज़लों को समेटने की अधिक से अधिक कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"असल बात यही है कि ख़ुदा जो चाहता है करता है। वीराना को आबादी और आबादी को वीराना बनाता है। देखो बाबुल शहर के साथ क्या किया जिस जगह मनुष्य की योजना थी कि आबादी हो वहाँ अल्लाह तआला की इच्छा से वीराना बन गया और उलुओं का वास हो गया और जिस जगह इंसान चाहता था कि वीराना हो वह दुनिया भर के लोगों के आने का स्थान हो गया। (यानी मक्का ख़ाना काबा।) तो ख़ूब याद रखो कि अल्लाह तआला को छोड़कर दुआ और चतुराई पर भरोसा करना मूर्खता है। अपने जीवन में ऐसे परिवर्तन पैदा कर लो कि मालूम हो कि मानो नया जीवन है। इस्तिग़फार की बहुतायत करो जिन लोगों को अक्सर दुनिया के कामों में लीन होने के कारण कम फुर्सत है उन्हें सब से अधिक डरना चाहिए।" (जो समझते हैं कि दुनिया के शौक हमें बहुत हैं। व्यस्तता बहुत हैं और इबादतों की, नमाज़ की फुर्सत नहीं उन्हें सब से अधिक डरना चाहिए।) "नौकरी पेशा लोगों से अक्सर ख़ुदा तआला के फर्ज़ फौत हो जाते हैं इसलिए मजबूरी की हालत में ज़ुहर असर और मग़रिब व इशा की नमाज़ों का जमा करके पढ़ लेना उचित है।" आप फरमाते हैं कि "मैं यह भी जानता हूँ कि अगर अधिकारियों से नमाज़ की इजाज़त मांगी जाए तो वह इजाज़त दिया करते हैं।(जहां आदमी नौकरी करता है, तो इन अधिकारियों पर अच्छा प्रभाव हो और इन से इजाज़त ली जाए नमाज़ों की तो नमाज़ पढ़ने की अनुमति दे देते हैं) फरमाया "अत: उच्च अधिकारियों द्वारा अधीनस्थ अधिकारियों को इस बारे में विशेष निर्देश मिले हुए होते हैं। " (कुछ जगह निर्देश होते भी हैं।) फरमाया कि "नमाज़ छोड़ने के लिए ऐसे बेकार बहाने सिवाय अपने नफस की कमज़ोरी के और कोई नहीं। अल्लाह के हुकूक और बन्दों के हुकूक में ज़ुल्म व ज़्यादती न करो। अपने कर्तव्यों को बहुत ईमानदारी से करो।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 265 प्रकाशन 1985 यू.के)

अत: केवल नमाज़ ही नहीं बल्कि इस से बढ़कर आप हम से उम्मीद करते हैं और इस बारे में नफलों और तहज्जुद की ओर ध्यान दिलाते हुए आप फरमाते हैं कि

"इस जीवन की कुल सांसें अगर सांसारिक कार्यों में बीत गए तो आख़िरत के लिए क्या जमा किया?" (अगर सारा समय, हर सांस, हर क्षण मनुष्य ने सांसारिक दुनियादारी के कमाने में खर्च कर दिया तो आख़िरत के लिए क्या जमा किया।) फरमाया कि "तहज्जुद में विशेष रूप से उठो और शौक से अदा करो। दरमियानी नमाज़ों में रोज़गार के कारण परीक्षा आ जाती है।" फरमाया कि "राज़िक अल्लाह तआला है। नमाज़ अपने समय पर अदा करनी चाहिए। ज़ुहर असर कभी-कभी जमा हो सकती है। अल्लाह तआला जानता था कि कमज़ोर लोग होंगे इसलिए यह गुंजायश रख दी मगर यह गुनजायश तीन नमाज़ों के जमा करने में नहीं हो सकती। जबकि नौकरी में और कई मामलों में लोग सज़ा पाते हैं (और अधिकारियों के ग़ुस्सा को उठाते हैं।) यदि अल्लाह तआला के लिए तकलीफ उठाऐं तो क्या खूब है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 6 प्रकाशन यू. के)

अंत सांसारिक नौकरियों में सांसारिक कार्यों में भी लोग सज़ा पाते हैं और तकलीफ उठाते हैं तो नमाज़ें पढ़ने के लिए अल्लाह तआला के लिए अगर थोड़ी सी तकलीफ उठा ली, तो यह तो लाभ ही लाभ है। तो हमेशा एक मोमिन को याद रखना चाहिए। अब रातें छोटी आ रही हैं। छोटी रातें नमाज़ समय पर न पढ़ने के लिए रोकें या न सांसारिक कार्यों की व्यस्तता इसके रास्ते में रोक बनें। इसलिए इस मामले में हमें हर समय अपने नफस का आत्मनिरीक्षण करते रहने की आवश्यकता है।

हम में से कई नमाज़ एक फर्ज़ समझकर अदा तो करते हैं लेकिन वास्तविकता ठीक से नहीं जानते। इस को स्पष्ट करते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

"नमाज़ क्या है? यह एक विशेष दुआ है मगर लोग इसे बादशाहों का टैक्स समझते हैं।" (मजबूरी से दे रहे हैं, अदा कर रहे हैं मानो कि टैक्स लगा हुआ है।) "मूर्ख इतना नहीं जानते कि भला ख़ुदा तआला को इन बातों की क्या ज़रूरत है उस की ग़नी हस्ती को इस बात की क्या ज़रूरत है कि इंसान दुआ, तस्बीह और तहलील में व्यस्त है बल्कि इसमें इंसान का अपना ही लाभ है कि वह इस तरीके पर अपने मतलब को पहुंच जाता है।" फरमाया "मुझे यह देखकर बहुत दु:ख होता है कि आजकल इबादत और तक्वा और धर्म से मुहब्बत नहीं है। इस का कारण एक आम ज़हर एक आम ज़हरीला प्रभाव रस्म का है। इसलिए अल्लाह तआला की मुहब्बत ठंडी हो रही है और इबादत में जिस प्रकार का मज़ा आना चाहिए वह मज़ा नहीं आता। दुनिया में कोई ऐसी वस्तु नहीं जिस में सुख और एक विशेष आन्नद अल्लाह तआला ने न रखा हो।" फरमाया कि "जिस तरह से एक रोगी एक अच्छे से अच्छे ख़ुश स्वाद चीज़ का मज़ा नहीं ले सकता और वह उसे कड़वा या बिल्कुल फीका समझता है।" (कई बार मुँह बेस्वाद हो जाता है। बीमारी के कारण) "इसी तरह जो लोग अल्लाह तआला की इबादत में आनन्द और सुख नहीं पाते उन्हें अपनी बीमारी की चिंता करनी चाहिए क्योंकि जैसा मैंने अभी कहा है दुनिया में ऐसी कोई बात नहीं है जिस में ख़ुदा तआला ने कोई न कोई सुख न रखा हो। अल्लाह तआला ने मानव जाति को इबादत के लिए पैदा किया है तो फिर क्या कारण है कि इस इबादत में उसके लिए आन्नद और मज़ा न हो।" (एक ओर अल्लाह तआला फरमाता है कि मैंने पैदा ही इबादत के लिए किया है तो इसमें कोई सुख नहीं रखा।) फरमाया कि "सुख और आन्नद तो है मगर उस से लाभ उठाने वाला भी तो हो।" (इस आन्नद को कोई पाने वाला भी तो हो।) अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْن (अज़्ज़ारियात 57)

अब इंसान जबकि इबादत के लिए बनाया गया है। आवश्यक है कि इबादत में सुख और आन्नद भी अत्यधिक रखा हो। इस बात को हम अपने दैनिक अवलोकन और अनुभव से ख़ूब समझ सकते हैं।" (हर काम में अल्लाह तआला ने आन्नद और मज़ा रखा है और हर प्रतिदिन जो दैनिक काम कर रहे हैं उन से इसका पता चलता है अवलोकन में बातें आती हैं।) फिर फरमाया कि "जैसे देखो अनाज और सभी खाद्य और पीने वाली वस्तुऐं (जो भी खाने पीने वाली चीज़ें हैं) "मनुष्य के लिए पैदा हुई हैं तो क्या उन से वह एक आन्नद और मज़ा नहीं पाता।? (बड़े मज़ेदार खाने पके

हों तो बड़ा मज़ा आता है।) "क्या इस स्वाद, मज़े और अनुभव के लिए उसके मुंह में ज़बान मौजूद नहीं ? क्या वह सुंदर सामान देखकर वनस्पति हों या पशु हों या इंसान मज़ा नहीं पाता ?" खाने का मज़ा भी लेता है। सौंदर्य का मज़ा भी सुंदर चीज़ देख कर वह आँखों के माध्यम से इस का आनन्द उठाता है।) "क्या दिल को ख़ुश करने वाली और सुरीली आवाज़ों से उसके कान आनन्दित नहीं होते।?" (अल्लाह तआला ने कान रखे हैं अब कानों में मधुर आवाज़ पहुंचे तो इस से दिल ख़ुश होता है) "फिर क्या कोई दलील और भी इस बात की पुष्टि के लिए आवश्यक है कि इबादत में आनन्द नहीं है।" (इन सारी बातों में तो सुख है इन से तो आनन्द होता है जो अल्लाह तआला ने पैदा कीं लेकिन इबादत में अगर सुख नहीं है तो यह कैसे हो सकता है। ये सारी बातें इस बात का सबूत हैं कि वास्तव में इबादत में भी अल्लाह तआला ने आनन्द रखा है।) फरमाया कि "अल्लाह तआला फरमाता है कि हम ने महिला और पुरुष जो जोड़ा बनाया और पुरुष को रग़बत दी है अब इसमें ज़बरदस्ती नहीं बल्कि एक मज़ा भी दिखलाया है। अगर केवल संतान का पैदा होना ही उद्देश्य होता तो मतलब पूरा नहीं हो सकता।" फरमाया "ख़ुदा तआला का उद्देश्य बन्दों को पैदा करना था और इस कारण के लिए एक आकर्षण औरत मर्द के सम्बन्ध में स्थापित किया और आंशिक रूप से इसमें एक मज़ा रख दिया जो अक्सर मुर्खों के लिए मूल उद्देश्य हो गया।" (कुछ लोग दुनियादार केवल यही समझते हैं कि यही हमारा उद्देश्य है।) फरमाया कि "इसी तरह से ख़ूब समझ लो कि इबादत भी कोई बोझ और टैक्स नहीं। इस में भी एक आनन्द और मज़ा है और यह आनन्द और मज़ा दुनिया के सभी सुख और सारे नफस के मज़ों से ऊपर और ऊंचा है।" आप फरमाते हैं कि "जैसे एक रोगी एक उत्कृष्ट से उत्कृष्ट ख़ुश स्वाद भोजन के सुख से वंचित है हां उसी तरह से, हां ठीक ऐसा ही वह कम्बख्त व्यक्ति है जो अल्लाह तआला की इबादत आनन्द नहीं पा सकता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 6 प्रकाशन यू. के)

अगर एक मरीज़ एक अच्छा आहार अपने रोग की वजह से बीमारी के कारण मुंह कड़वा होने के कारण इस को पसंद नहीं आती। इसका स्वाद महसूस नहीं होता तो इसका मतलब यह नहीं कि खाना ख़राब है। इसका मतलब है कि वह रोगी है। इसी तरह जो नमाज़ और इबादत से आनन्द नहीं उठाता इसका मतलब यह नहीं कि नमाज़ों में मज़ा नहीं है या अल्लाह तआला ने आनंद नहीं रखा है, लेकिन आदमी अपनी तबीयत बीमारी, बद ज़ौकी इस से आनंद नहीं उठाती।

इसलिए हमें ऐसी बातों की तलाश करनी चाहिए। जिस में आनन्द और मज़ा हो न कि केवल एक बोझ समझकर गले से उतारा जाए। जब ऐसी स्थिति होगी तो जैसा कि मैंने कहा कुछ लोग लंबी रातों में तो सुबह नमाज़ पर आ जाते हैं। अब छोटी रातें हों तो सुबह नमाज़ पर आना छोड़ देते हैं। उन का ध्यान फिर इस ओर रहेगा ताकि आन्नद प्राप्त हो और बाकी नमाज़ों को अदा करने का भी ध्यान रहेगा।

फिर आन्नद और मज़ा के लेख आगे बयान फरमाते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अत: मैं देखता हूँ कि लोग नमाज़ में लापरवाह और सुस्त इसलिए होते हैं कि उन्हें इस आनन्द और मज़ा से ख़बर नहीं जो अल्लाह तआला ने नमाज़ के अंदर रखी है और बड़ा भारी कारण इसका यही है" (कि उस को पता नहीं।) "फिर शहरों और गांवों में तो और भी सुस्ती और लापरवाही होती है। सौ पचासवें हिस्सा भी तो पूरी मुस्तैदी और सच्चे प्यार से अपने वास्तविक मौला के समक्ष सिर नहीं झुकाता। फिर सवाल यही उठता है कि क्यों उन्हें इस आनन्द की सूचना नहीं और न कभी उन्होंने इस मज़ा को चखा। अन्य धर्मों में ऐसे नियम नहीं हैं कभी ऐसा होता है कि हम अपने कामों से व्यस्त होते हैं और मुअज्जिन अज़ान दे देता है। फिर वे सुनना भी नहीं चाहते। मानो उनके दिल दुखते हैं।" (यानी अज़ान की आवाज़ सुनी तो सुनना भी नहीं चाहते कि ओ हो अब तो नमाज़ पर जाना होगा। या ध्यान ही नहीं देते।) "यह लोग बहुत ही दयनीय है। कुछ लोग यहाँ भी ऐसे हैं कि उनकी दुकानें देखो तो मस्जिदों के नीचे हैं, लेकिन कभी जाकर खड़े भी तो नहीं होते। इसलिए मैं यही कहना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला से बहुत वेदना और एक जोश के साथ यह दुआ मांगनी चाहिए कि जिस तरह फलों और वस्तुओं की विभिन्न प्रकार की लज़्ज़तें दी हैं। नमाज़ और इबादत का भी एक बार मज़ा चखा दे।" फरमाया कि " खाने का, फलों का बाकी चीजों का ज़बान में मज़ा आता है इसी तरह अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें नमाज़ का भी मज़ा चखा दे।" फरमाया कि "खाया हुआ याद रहता है। देखो अगर कोई व्यक्ति किसी सुंदर को एक मज़े के साथ देखता है तो वह उसे ख़ूब याद रहता है और फिर अगर किसी बुरी शकल और घृणित को देखता है तो उसकी सारी स्थिति उस के सामने साक्षात होकर सामने आ जाती है।" (सौंदर्य भी याद रहता है विकृति भी याद रहती है।) "हां अगर कोई संबंध न हो तो कुछ याद नहीं रहता। इसी तरह बे नमाज़ों के निकट नमाज़ एक सज़ा है कि बिना किसी कारण सुबह उठ कर ठंड में वुज़ू करके ख़वाब के मज़े छोड़कर कई प्रकार की सुविधाओं को खो कर पढ़नी पड़ती है। मूल बात यह है कि इसे विरक्तता है। वह उसे समझ नहीं सकता। इस आन्नद और राहत से जो नमाज़ में है उसे सूचना नहीं है फिर नमाज़ में सुख कैसे हासिल हो।" फरमाया कि "मैं देखता हूं कि एक शराबी और नशे बाज आदमी को जब मज़ा नहीं आता तो वह एक के बाद एक कटोरे पीता जाता है यहाँ तक कि एक प्रकार का नशा आ जाता है। बुद्धिमान और बुज़ुर्ग आदमी इससे लाभ उठा सकता है।" (यह जो नसीहत है नशा करने वाले की भी जो यह नमूना है इस से भी एक बुद्धिमान व्यक्ति लाभ उठा सकता है।) "और वह "क्या लाभ उठाए) यह कि नमाज़ पर स्थायी रहे और पढ़ता जाए।" (मज़ा आता है या नहीं आता। इस कोशिश में रहे कि मुझे मज़ा आए। अल्लाह तआला से दुआ भी करे और नियमित हो जाए। पढ़ता जाए।) "यहां तक कि उसे मज़ा आ जाए और जैसे शराबी के दिमाग़ में एक आन्नद होता है जिसका प्राप्त करना उसका मूल उद्देश्य होता है उसी तरह से दिमाग़ में और सारी शक्तियों की प्रवृत्ति नमाज़ में उसे मज़ा प्राप्त करना हो तो एक ईमानदारी और जोश के साथ कम से कम इस नशा करने वाले के वेदना और बेचैनी की तरह ही एक दुआ पैदा हो कि वह सुख प्राप्त हो।" (एक पीड़ा पैदा हो, एक वेदना पैदा हो, इस वजह से दुआ हो) तो फरमाया कि "तो मैं कहता हूँ और सच-सच कहता हूं कि वास्तव में निश्चित रूप से वह सुख प्राप्त हो जाएगा। फिर नमाज़ पढ़ते समय उन हितों को प्राप्त करना भी ध्यान में हो जो इस से होते हैं और अहसान मद्देनज़र रहे।" फरमाया कि إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ (हूद: 115) कि नेकियाँ बुराइयों को ख़त्म कर देती हैं। अत: इन नेकियों और सुख को दिल में रखकर दुआ करे कि वह नमाज़ जो कि सिद्दीकों और मुहसिनों की है वह नसीब करे।" (यह दुआ हो।" फरमाया कि यह जो फरमाया है कि إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ (हूद: 115) अर्थात नेकियाँ या नमाज़ बुराइयों को दूर करती हैं या दूसरे स्थान पर फरमाया है कि नमाज़ फवाहिश और बुराइयों से बचाती है और हम देखते हैं कि कुछ लोग भी नमाज़ पढ़ने के फिर बुराइयां करते हैं।" (यह भी दुनिया में नज़र आता है ज़ाहिर में बड़ी नमाज़ें भी पढ़ रहे हैं लेकिन बुराइयां करते हैं।) फरमाया "इसका जवाब यह है कि वह नमाज़ें पढ़ते हैं मगर न रूह और सच्चाई के साथ।" (सच्चाई के साथ और दिल लगाकर और रूह की गहराई से नमाज़ नहीं पढ़ते) "वह केवल रस्म और आदत के रूप में टकरें मारते हैं उनकी रूह मुर्दा है। अल्लाह तआला ने उनका नाम "हसनात" नहीं रखा और यहां जो "हसनात" शब्द रखा "अस्सलात" का शब्द नहीं बावजूद कि अर्थ वही हैं इस का कारण यह है कि ताकि नमाज़ की खूबी और हुस्न व जमाल की ओर इशारा कर कि वे नमाज़ बुराइयों को दूर करती जो अपने अंदर एक सच्चाई की रूह रखती है और फ़ैज़ का प्रभाव इसमें मौजूद है वह नमाज़ सुनिश्चित रूप से बुराइयों को दूर करती है। नमाज़ उठने बैठने का नाम नहीं है। नमाज़ का मेरुदण्ड और रूह वह दुआ है जो एक आन्नद और मज़ा अपने अंदर रखती है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 162,से134 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर नमाज़ की विभिन्न हालतों की हिक्मत और जो प्रभाव उन का हम पर होना चाहिए। इस का विवरण बयान फरमाते हुए एक जगह एक अवसर पर आप ने फरमाया कि "याद रखो नमाज़ में व्यवहार और कथन दोनों को जमा होना चाहिए" (यानी अपनी ऐसी हालत भी पैदा हो, ऐसी स्थिति पैदा हो जो नमाज़ की हालत होनी चाहिए और दूसरे यह भी एहसास हो कि इंसान अल्लाह तआला के सामने खड़ा है इस से बातें कर रहा है।) फरमाया कि "कई बार हालत तस्वीर की होता है" (यानी तस्वीरी हालत पैदा होती है। ऐसी शक्ल पैदा होती है जिस को तस्वीरी शक्ल दी जाती है) फरमाया "ऐसी तस्वीर दिखाई जाती है जिससे देखने वाले को पता मिलता है कि इसकी इच्छा यह है। ऐसा ही सलात में अल्लाह तआला की इच्छा की तस्वीर है।" (नमाज़ें जो हैं, इस की जो विभिन्न स्थितियाँ हैं उसमें अल्लाह तआला इंसान से क्या चाहता है इसका एक तस्वीरी नमूना स्थापित किया गया है।) फरमाया कि "नमाज़ में जैसे ज़बान से कुछ पढ़ा जाता है वैसे ही अंग व शरीर की हरकतों से कुछ दिखाया भी जाता है।" (नमाज़ में जो हम मुंह से पढ़ते हैं हमारी जो हरकतें हैं उन को व्यक्त करना भी इन शब्दों के साथ होना चाहिए।) फरमाया "जब इंसान खड़ा है और तहमीद और तस्बीह (महिमा) करता है उसका नाम क़ियाम रखा। अब प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि स्तुति तथा प्रशंसा के योग्य उचित हालत क़ियाम ही

है" (जब इंसान खड़ा हो तस्बीह और स्तुति कर रहा हो अल्लाह तआला की प्रशंसा कर रहा हो तो खड़ा हो कर करता है।) फरमाया कि "देखो बादशाहों के सामने जब कसीदे सुनाए जाते हैं तो आख़िर खड़े होकर पेश करते हैं तो इधर ज़ाहरी तौर पर क़ियाम रखा है और उधर ज़बान से स्तुति (प्रशंसा) भी रखी है मतलब इसका यही है कि आध्यात्मिक रूप में भी अल्लाह तआला के हुज़ूर खड़ा हो।" (जब खड़ा हो सामने और सूरह फातिहा पढ़ रहा हो और स्तुति प्रशंसा कर रहा हो तो आध्यात्मिक रूप से भी यह क़ियाम दिखना चाहिए, दिल पर प्रभाव होना चाहिए।) फरमाया कि "स्तुति एक बात पर कायम होकर की जाती है जो व्यक्ति सच्चा होकर किसी की तारीफ करता है तो वह एक राय पर क़ायम हो जाता है"। (झूठी प्रशंसाएं तो नहीं होती किसी की प्रशंसा की जाती है अगर वास्तविक सच्चा इंसान है तो किसी की पुष्टि कर के ही प्रशंसा करता है।) फरमाया कि "अल्हम्दो लिल्लाह कहने वाले के लिए यह आवश्यक था कि वह सच में अल्हम्दो लिल्लाह उसी समय कह सकता है कि पूरे तौर पर यह विश्वास हो जाए कि स्तुति की सारी किस्में अल्लाह तआला ही के लिए ही हैं।" (सभी प्रकार की जो प्रशंसाएं जो हैं वह अल्लाह तआला के लिए हैं।) "जब दिल में यह बात पैदा हो गई की सब प्रकार की प्रशंसाए अल्लाह तआला के लिए हैं वही सब प्रशंसाओं के योग्य है और उसी की प्रशंसा करनी चाहिए और इसके अलावा कोई और दूसरा नहीं जिसकी प्रशंसा की जाए तो यह क़ियाम केवल हाथ बांधकर खड़ा होना नहीं होगा बल्कि आध्यात्मिक क़ियाम हो जाएगा फिर) "क्योंकि दिल उस पर स्थापित हो जाता है और फिर समझा जाता है कि वह खड़ा है। हालत के अनुसार खड़ा हो गया ताकि आध्यात्मिक क़ियाम नसीब हो।" (यह इस की हालत है जो हार्दिक हालत है उसके अनुसार खड़ा हो गया।) "फिर रुकूअ में "सुब्हान रब्बे अल्अज़ीम" कहता है। नियम की बात है कि जब किसी की महानता मान लेते हैं तो उसके सामने झुकते हैं। महानता की मांग है कि इस के लिए रुकूअ करे तो "सुब्हान रब्बे अल्अज़ीम" ज़बान से कहा और व्यवहार से झुकना दिखा दिया।" (ज़बान ने अल्लाह तआला की महानता को व्यक्त किया उसकी पवित्रता बयान की और इसके साथ ही मनुष्य रुकूअ में चला गया झुक गया।) "यह इस कथन के साथ हालत दिखाई।" (यानी वह बात मुंह से निकली और साथ ही हालत जब छा गई तो वह झुकने की थी।)

फिर तीसरा कथन है "सुबहान रब्बियल आला।" आला "अफअल" और "तफज़ील" है। (अर्थात फज़ीलत देने का व्यावहारिक रूप है। यह सजदे की हालत है। मतलब है यह फज़ीलत की उच्चतम अभिव्यक्ति है।) "यह अपने आप में सजदे को चाहता है।" (जब अल्लाह तआला की महानता वर्णन करने का, उस की पवित्रता वर्णन करने की और बड़ाई बयान करने की यह उच्चतम अभिव्यक्ति हो तो यह फिर इस बात को चाहती है कि सजदा किया जाए अल्लाह तआला के सामने पूरी तरह झुक जाया जाए।) "इसलिए उसके साथ व्यावहारिक तस्वीर सजदे में गिरना है।" (अब ज़ाहरी तस्वीर उस की यह होगी हालत कि आदमी सजदे में गिर जाए) "इस स्वीकरोक्ति के उचित हाल देखो तुरन्त धारण कर लिया" (यानी जब अल्लाह तआला की पवित्रता और उसका उच्च होना और उस की सबसे उत्कृष्टता दिल से स्वीकार किया तो साथ ही ज़मीन पर सिजदा दिया या यह इस का धारण करना है यह जो हालत है इस का प्रकट करना है।) फरमाया कि "इस कथन के साथ तीन हालतें शारीरिक हैं। एक तस्वीर इस के आगे पेश की गई। प्रत्येक प्रकार का क़ियाम भी किया गया। ज़बान जो शरीर का टुकड़ा है उसने भी कहा और वह शामिल हो गई। तीसरी चीज़ और है वह अगर शामिल न हो तो नमाज़ नहीं होती। वह क्या है? वह दिल है।" (हृदय है।) "इसके लिए आवश्यक है कि दिल का क़ियाम हो अल्लाह तआला उस पर नज़र करके देखे कि वास्तव में वह स्तुति भी करता है और खड़ा भी है और रूह भी खड़ी हुई स्तुति करती है शरीर ही नहीं बल्कि रूह भी खड़ी है।" (यानी कि दिल से। अल्लाह तआला तो दिल की हालत जानता है उसे पता लग रहा है कि शरीर के साथ रूह भी खड़ी स्तुति कर रही है या झुक रही है या सजदा कर रही है।) "और जब "सुब्हान रब्बे अल्अज़ीम" कहता है तो देखे कि इतना ही नहीं कि सिर्फ महानता को स्वीकार ही किया है बल्कि साथ ही झुका भी है और साथ ही रूह भी झुक गई है। फिर तीसरी नज़र में ख़ुदा के सामने सजदे में गिरा है उसकी ऊंची शान के दर्शन कर के इसके साथ ही देखे कि रूह भी अल्लाह तआला के समक्ष गिरी हुई है।) "रूह भी गिर जाए साथ ही। यानी कि दिल भी इसी तरह सजदे में चला जाए।) "अत: यह स्थिति जब तक न हो ले तब तक संतुष्ट न हो क्योंकि "युकीमून्स्सलात" के अर्थ यही हैं अगर यह सवाल हो कि यह स्थिति पैदा कैसे हो" (कैसे पैदा की जाए) तो जवाब इतना ही है कि नमाज़ पर नियमितता करो। नमाज़ें पढ़ने में नियमित धारण करो "और शंकाओं और संदेह से परेशान न हो। नमाज़ पढ़ते हुए शंकाएं भी आती हैं। संदेह भी पैदा होते हैं उन से परेशान न हो बल्कि नियमित नमाज़ें पढ़ते चले जाओ।) "प्रारंभिक अवस्था में संदेह से जंग ज़रूर होती है" (शुरूआत में जो संदेह तथा शंकाएं हैं, उन से इंसान की एक लड़ाई रहती है। शैतान हमले करता है। शैतान से लड़ाई जारी रहती है) "इसका इलाज यही है कि न थकने वाली दृढ़ता और धैर्य के साथ लगा रहे और ख़ुदा तआला से दुआ मांगता रहे। आख़िर वह स्थिति पैदा हो जाती है जिसका (फरमाया कि) मैंने अभी उल्लेख किया है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 433-435 प्रकाशन यू. के)

इसलिए स्थिरता शर्त है। अगर इंसान में पैदा हो जाए तो अल्लाह तआला दौड़कर फिर अपने बन्दे की तरफ आता है। फिर अल्लाह के फज़ल भी नाज़िल होते हैं लेकिन इस हकीकत को बहुत से लोग समझते नहीं। जल्दबाजी में ख़ुदा तआला के दरवाज़ा को छोड़ देते हैं या इसके महत्त्व को नहीं समझते कम महत्त्व समझते हैं और दुनिया के संस्थानों की ओर भी फिर दौड़ लगा देते हैं।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "फिर यह बात याद रखने योग्य है कि यह नमाज़ जो अपनी असली अर्थों में नमाज़ है दुआ से प्राप्त होती है। अल्लाह के अतिरिक्त से सवाल करना मोमिनों के सम्मान के स्पष्ट और सख्त विरोधी है क्योंकि यह स्थान दुआ का अल्लाह ही के लिए है।"(एक दूसरे से वास्ता पड़ता रहता है। सवाल होते हैं लेकिन ऐसे सवाल जिनका संबंध केवल ख़ुदा तआला से है ख़ुदा तआला को छोड़कर किसी से उम्मीद रखना और सिर्फ उसी पर भरोसा करना यह चीज़ ग़लत है।) फरमाया कि "जब तक मनुष्य पूरी तरह पर लज्जित होकर अल्लाह तआला ही से सवाल न करे और इसी से न मांगे सच समझो कि वास्तव में वह मुसलमान और सच्चा मोमिन कहलाने का हकदार नहीं। इस्लाम की वास्तविकता ही यही है कि सभी शक्तियां आंतरिक हों या बाहरी सब की सब अल्लाह ही के आस्ताने पर गिरी हुई हैं जिस तरह से एक बड़ा इंजन कई पुर्ज़ों को चलाता है।" (बहुत से पुर्जों को चलाता है।) "तो इसी तरह से जब तक मनुष्य अपने हर काम और हर हरकत और आराम इसी इंजन की अज़ीम ताकत के अधीन न कर ले वह क्योंकर अल्लाह की ख़ुदाई को स्वीकार कर सकता है और अपने आप को "इन्नी वज्हिया लिल्लाज़ी फतरस्सस्मावाते वल्अरज़ा।" कहते समय वास्तव में हनीफ कह सकता है। ? जैसे मुंह से कहता है वैसे ही उधर की ओर ध्यान हो तो नि:सन्देह वह मुस्लिम है, वह मोमिन और हनीफ़ है।" (जिस तरह मुंह से कहा है इसी तरह अल्लाह की ओर ध्यान भी हो जाए तो मुसलमान भी है वह मोमिन भी है और वह हनीफ भी है मोहिद भी है) "लेकिन जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त किसी से सवाल करता है और उधर भी झुकता है" (यानी एक ओर अल्लाह की तरफ झुक रहा है या अल्लाह के अलावा इस ओर झुक रहा है या अल्लाह के साथ दूसरों को भी मिला रहा है।) "वह याद रखे कि बड़ा ही दुर्भाग्य पूर्ण और वंचित है कि वह समय आ जाने वाला है कि वह मौखिक और प्रदर्शन के रूप में अल्लाह तआला की ओर न झुक सके।"(यानी फिर अल्लाह तआला इस से परे हट जाता है। फिर एक समय आता है कि प्रकट रूप में नहीं झुकने वाला होता।) फरमाया कि "नमाज़ को छोड़ने की आदत और सुस्ती का एक कारण यह भी है क्योंकि जब मनुष्य अल्लाह के अतिरिक्त झुकता है तो रूह और दिल की शक्तियां उस पेड़ की तरह (जिसकी शाखाएं उत्पत्ति से एक ओर निकलती जाएं और इस तरफ झुक कर परवरिश पा लें) उधर ही झुकती हैं और ख़ुदा तआला से एक कठोरता और हिंसा उसके दिल में पैदा होकर उसे स्थिर और पत्थर बना देता है।" (पेड़ों की शाखाएं अगर एक तरफ बांध दी जाएं तो उधर ही चलती जाती हैं इसलिए इंसान भी फिर अगर बन्दों की ओर झुकता है तो बन्दों की ओर ही चला जाता है और फिर अल्लाह तआला से भी उसका दिल कठोर हो जाता है।) फरमाया कि "जैसे वह शाखाएं (जो एक ओर झुकती हैं) फिर दूसरी ओर मुड़ नहीं सकतीं। इसी तरह दिल और रूह दिन प्रतिदिन ख़ुदा तआला से दूर होता जाता है। इसलिए यह बड़ी ख़तरनाक और दिल को कपकपा देने वाली बात है कि इंसान अल्लाह तआला को छोड़कर दूसरे से सवाल करे इसी लिए नमाज़ का प्रावधान और पाबन्दी ज़रूरी चीज़ है ताकि सबसे पहले वह एक आदत मज़बूती की तरह स्थापित हो और अल्लाह तआला की तरफ लौटने का विचार हो। फिर धीरे-धीरे वह समय ख़ुद आ जाता है जब कि सम्पूर्ण रूप से अलग होने की हालत में इंसान एक प्रकाश और एक नूर का वारिस हो जाता है

(पहले तो कोशिश करके नमाज़ पढ़नी पड़ती है और धीरे धीरे जब आदत पड़ जाए शुद्ध हो कर जब अल्लाह तआला की तरफ झुकता चला जाए तो अल्लाह तआला के फज़लों का वारिस बन जाता है।) फरमाया कि "मैं इस बात को फिर ताकीद से कहता हूं अफसोस है कि मुझे वह शब्द नहीं मिले, जिन में अल्लाह के अतिरिक्त लौटने की बुराईयां बयान कर सकूँ। लोगों के पास जाकर विनती खुशामद करते हैं यह बात ख़ुदा तआला की ग़ैरत को जोश में लाती है क्योंकि यह तो लोगों की नमाज़ है। इसलिए वे इस से हटता और इसे दूर फेंक देता है। मैं मोटे शब्दों में इस का वर्णन करता हूँ यद्यपि यह बात इस तरह से नहीं है, लेकिन समझ में खूब आ सकती है।" (ये बातें इस तरह तो नहीं लेकिन एक सांसारिक उदाहरण है वह समझाने के लिए बयान करता हूँ) "कि जैसे एक ग़य्यूर मर्द का सम्मान तकाज़ा नहीं करता कि वह अपनी बीवी को किसी दूसरे के साथ संबंध पैदा करते हुए देख सके और जिस तरह फिर ऐसी हालत में (यह भी मामला हो जाता है कि) ख़राब औरत को क़त्ल के योग्य समझता है" (कुछ लोग ऐसे भी होते हैं।) इसलिए फरमाया कि "अबूदियत और दुआ विशेष रूप से इसी हस्ती के मुकाबला में हैं।" (यानी कि अबोदियत और दुआ केवल अल्लाह तआला से करनी चाहिए क्योंकि) "वह(अल्लाह तआला) पसंद नहीं करता कि किसी और को उपास्य घोषित किया जाए या पुकारा जाऐ। तो ख़ूब याद रखो और फिर याद रखो कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की तरफ झुकना ख़ुदा से कटना है। नमाज़ और तौहीद कुछ ही कहो क्योंकि एकेश्वरवाद के व्यावहारिक स्वीकार करने का नाम ही नमाज़ है। उस समय बरकत रहित और निरर्थक होती है जब इसमें विनय की भावना और सीधा दिल न हो।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 166-167 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

कुछ लोग कहते हैं कि हम बहुत रोए। बहुत नमाज़ पढ़ीं लेकिन कुछ हासिल नहीं हुआ। ऐसे लोगों की बात को नकारते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "कुछ लोगों का यह मानना है कि अल्लाह तआला के लिए रोने धोने से कुछ नहीं मिलता। (यह बात) बिल्कुल ग़लत और झूठ है। ऐसे लोग अल्लाह तआला की हस्ती और उसकी विशेषताओं क़ुदरत और सामर्थ्य पर विश्वास नहीं रखते। अगर उनमें वास्तविक ईमान होता तो वह ऐसे कहने का साहस नहीं करते जब कभी कोई व्यक्ति अल्लाह तआला के सामने आया है और वह सच्ची तौबा के साथ लोटा है अल्लाह तआला ने हमेशा उस पर अपना फज़ल किया है कि किसी ने बहुत सही कहा है कि

आशिक कि शुद कि यार बहाल नज़र न कर्द
ए ख्वाजा दर्द नीस्त वगरन तबीब हस्त

(अर्थात वह आशिक ही किया कि प्रिय जिसकी तरफ नज़र ही न करे। हे साहिब! दर्द ही नहीं है अन्यथा चिकित्सक तो मौजूद है यह ग़लत है कि तुम्हें दर्द है।) "ख़ुदा तआला तो चाहता है कि उसके सम्मुख नेक दिल लेकर आ जाओ। केवल शर्त इतनी है कि उस के उचित हाल अपने आप को बनाओ।" (यह बहुत बड़ी बात है। उसके उचित हाल ख़ुद को बनाओ। जिस तरह उसने कहा है इस तरह चलो) "और वह सच्चा परिवर्तन जो ख़ुदा तआला के पास जाने में सक्षम बनाता है अपने अंदर करके दिखाओ। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि ख़ुदा तआला में अजीब दर अजीब कुदरतें हैं और उस में असीमित फज़ल और बरकतें हैं मगर उनके देखने और पाने के लिए प्यार की आंख पैदा करो।" (अल्लाह तआला से सच्चा प्रेम पैदा करो।) फरमाया कि "अगर सच्चा प्रेम हो तो ख़ुदा तआला बहुत दुआएँ सुनता है और समर्थन करता है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 352-353 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए अपनी स्थिति हमें ऐसी बनाने की ज़रूरत है कि ख़ुदा तआला हमारी सुने। जो आपत्ति करते हैं कि अल्लाह तआला सुनता नहीं उन में से अधिकांश तो नमाज़ें भी पांच बार पूरी नहीं पढ़ते। केवल दुआ का विचार उस समय आता है जब कोई सांसारिक मुश्किल हो। अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं निश्चित रूप से सुनूंगा लेकिन तुम मेरी आज्ञाओं पर चलो और प्रत्येक अपनी समीक्षा कर ले कि क्या वह ख़ुदा तआला की आज्ञाओं का पालन करता है। अगर अल्लाह तआला का शिकवा है तो पहले इस बात का जवाब दे कि कितने हैं जो (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह लिखा है कि अल्लाह तआला ने कुरआन में सात सौ आदेश दिए हैं कि) इन सात सौ आज्ञाओं का पालन करते हैं तो यहां मुकाबला करना है तो वहां भी मुकाबला आ गया। यह तो ख़ुदा तआला का फज़ल है कि इसके बावजूद अपने बन्दों पर दया करते हुए उन्हें नज़र अंदाज़ करता है उनकी बहुत सारी बातों से उनकी कई दुआओं को सुन भी लेता है। कई लोग हैं जो शायद नमाज़ों के नियमित पढ़ने वाले नहीं लेकिन उनकी कई दुआएं सुनी गईं तो यह अल्लाह का एहसान है बल्कि अल्लाह तो दुआओं के बिना ही अपनी दूसरी विशेषताओं के तहत उनकी ज़रूरतों को पूरा कर देता है। तो शिकवा करने का तो कोई स्थान ही नहीं है तो हमें अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलने की कोशिश करनी चाहिए और उसके अनुसार अपनी इबादतों और नमाज़ों और अन्य फर्ज़ों को निभाने की कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "जब तक मनुष्य पूर्ण रूप से तौहीद पर प्रतिबद्ध नहीं होता। उस में इस्लाम की मुहब्बत और गरिमा स्थापित नहीं होती।" फरमाया कि "नमाज़ का आन्नद और मज़ा यह नहीं हो सकता। भरोसा इसी पर है कि जब तक बुरे इरादे अशुद्ध और गंदे मंसूबे भस्म न हों। अहंकार और दुश्मनी दूर होकर विनय और दीन भावना न आए ख़ुदा का सच्चा सेवक नहीं कहला सकता।" फरमाया कि "पूर्ण अबिदयत सिखाने के लिए सबसे अच्छा शिक्षक और सबसे श्रेष्ठ माध्यम नमाज़ ही है।" अगर पूर्ण अबोदियत हासिल करनी है तो इसके लिए सबसे अच्छी सिखाने वाली चीज़ जो है, शिक्षक जो है वह नमाज़ है। आपने फरमाया कि "मैं तुम्हें बतलाता हूँ कि अगर ख़ुदा से सच्चा और वास्तविक संबंध स्थापित करना चाहते हो तो नमाज़ पर प्रतिबद्ध हो और ऐसे प्रतिबद्ध बनो कि तुम्हारा शरीर, तुम्हारी ज़बान, बल्कि तुम्हारी रूह के इरादे और भावना सब के सब साक्षात नमाज़ हो जाएं।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 170 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अल्लाह हमें यह तौफ़ीक़ प्रदान करे कि हम अपनी नमाज़ों की इस तरह सुरक्षा करने वाले हों कि हमारी रूह और हमारी भावनाएं नमाज़ करने वाले बन जाएं।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। जो आदरणीया असग़री बेगम साहिबा पत्नी शेख रहमतुल्ला साहब मरहूम पूर्व अमीर जमाअत कराची का है। 27 मार्च अमेरिका में छोटी बीमारी के बाद 90 साल की उम्र में उनकी वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। 1943 ई में उनकी शादी शेख रहमतुल्लाह साहिब के साथ हुई थी। अपने पति से पहले 1944 में लाहौर में उन्होंने अहमदियत हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के हाथ पर स्वीकार की और सारी उम्र ख़िलाफत के साथ अपनी अहदे बैअत को बड़ी ईमानदारी व वफा से निभाया। बच्चों को भी हमेशा ख़िलाफत से जुड़े रखने की हिदायत फरमाती रहीं। ख़िलाफत का बेहद सम्मान करने वाली थीं। जब से एम.टी ए शुरू हुआ उसे देखना आप का प्रिय काम था । मरहूमा मूसिया थीं। बहुत अधिक धैर्यवती और शुक्र करने वाली, तहज्जुद पढ़ने वाली और नमाज़ तथा रोज़े की पाबन्द थीं। तिलावत कुरआन नियमित करतीं। जब पति जो कराची में सेवा का मौका मिला तो अपने पति के साथ साथ कंधे से कंधा मिलाकर आप भी जमाअत की सेवा करती रहीं। मेहमान नवाज़ी करना आप की बड़ी विशेषता थी। जब शेख़ साहब अमीर जमाअत कराची थे तो उनका बहुत व्यस्तता थीं। उस जमाना में मेहमान नवाज़ी भी उस में बहुत होती थी। उसकी ज़िम्मेदारी भी आप ने खूब निभाई। हज़रत मुस्लेह मौऊद, हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस, हज़रत ख़लीफातुल मसीह राबि की मेज़बानी का उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ। आर्थिक कुर्बानी में भी बहुत बढ़ी हुई थीं। 1950 ई में एक समय जमाअत पर वित्तीय तंगी का आया तो उस समय हज़रत मुस्लेह मौऊद ने विशेष तहरीक की थी जिस में शेख साहब उनके पति ने अपनी आय का बड़ा हिस्सा जमाअत के लिए कुर्बान करते रहे और यह भी उनके साथ कुर्बानी में नियमित थीं। बहुत सरल जीवन बिताने वाली। आडम्बरों से मुक्त महिला थीं। उनके बेटे लिखते हैं उनके कि अक्सर ख़लीफतुल मसीह की सेवा में दुआ का ख़त लिखने की बच्चों को हिदायत करती रहती थीं। आप ने पीछे पांच बेटे और दो बेटियां और तेनतालीस नवासियाँ पोते छोड़े हैं। आप के एक बेटे आदरणीय डॉक्टर नसीम रहमतुल्ला साहब उप अमीर जमाअत अमेरिका हैं और जो हमारी alislam.org साइट है इसके प्रभारी भी हैं। इसी तरह अपने दामाद रहमानी साहब यहाँ रहते हैं वह बड़ा लंबा समय सेक्रेटरी वसीयत भी रहे हैं। उनकी पत्नी जमीला रहमानी भी अपने क्षेत्र के सेक्रेटरी माल और अन्य सेवाऐं करती रही हैं या कर रही हैं। एक बेटे उनके फरहतुल्लाह शेख साहब उप अमीर फैसलाबाद शहर पाकिस्तान में हैं। अल्लाह तआला मरहूमा के स्तर ऊंचा करे और उनकी नस्लों और वंश को भी जमाअत और ख़िलाफत से जोड़े रहे।

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 19 May 2016 Issue No. 11

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

जमाअतों की रिपोर्टें

अहमदिया मुस्लिम जमाअत हिमाचल का सर्व धर्म सम्मेलन

24 अप्रैल रविवार को अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत की हिमाचल प्रदेश ईकाई का सर्व धर्म सम्मेलन सरगम पैलेस धुसाड़ा स्थित अम्ब - ऊना मार्ग ऊना में मौलाना करीमुद्दीन शाहिद प्रिंसिपल जामिया अहमदिया (अरबी महाविद्यालय) कादियान की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

इस प्रोग्राम में जमाअत के उत्तर भारत के प्रचार सचिव मौलाना मोहम्मद हमीद कौसर ने पहला भाषण करते हुए हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ईश्वर की सृष्टि से प्रेम विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब तक व्यक्ति ईश्वर की सृष्टि से प्रेम नहीं करता और अपने पड़ोसी चाहे वह किसी भी धर्म से सम्बंधित क्यों न हो की मदद नहीं करता तब तक वह ईश्वर का सानिध्य प्राप्त नहीं कर सकता। वहीं संत बाबा बाल जी ने अपने संबोधन में कहा कि अहमदिया मुस्लिम जमात ने जो सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया है यह लोगों को आपस में जोड़ने के लिए एक अहम कड़ी की भूमिका निभाने जा रहा है तथा कार्यक्रम में हिंदू, मुस्लिम, सिख व ईसाई धर्म के प्रतिनिधियों का एक मंच पर जमा होना इस बात का प्रमाण है। इस अवसर पर जमाअत के राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार सचिव ज्ञानी तनवीर अहमद ख़ादिम ने कहा कि आज दुनिया के हालातों को देखते हुए हर कोई इंसानियत जिंदाबाद के नारे तो लगा रहा है लेकिन उनमें से अधिकांश को इंसान शब्द के अर्थ का भी पता नहीं है। इस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इंसान शब्द अरबी के उंस शब्द से निकला है जिसका अर्थ है एक मुहब्बत और उंसान जो कि द्विवचन है जिसका अपभ्रंश इंसान है का अर्थ है दो मुहब्बतों का मिलन, पहली उस ईश्वर से जिसने मनुष्य को पैदा किया और दूसरी ईश्वर के पैदा किए गए बंदों से तथा जिसमें यह दोनों मोहब्बतें होंगी वही व्यक्ति इंसान कहलाने का असली हकदार है।

कार्यक्रम में शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री सम्पादक साप्ताहिक बदर ने इस्लाम की देश प्रेम की शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस्लाम धर्म के संस्थापक ने पूरे विश्व को यह शिक्षा दी कि अपने राष्ट्र से प्रेम ईमान का अभिन्न अंग है। उन्होंने कहा कि कुरआन में मुसलमानों को यह आदेश दिया गया है कि ऐ मुसलमानों तुम वह कौम हो जो दूसरों की भलाई के लिए पैदा की गई हो। इसी उद्देश्य के लिए हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी ने अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थापना की और परस्पर प्रेम की शिक्षा लोगों को दी।

अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष मौलाना करीमुदीन शाहिद ने जहां कार्यक्रम में शामिल होने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया वहीं उन्होंने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि सारी सृष्टि ईश्वर की रचना है और सर्वश्रेष्ठ वह है जो उसकी रचना से अत्यंत प्रेम करता है। उन्होंने कहा कि समय की जरूरत है कि हम परस्पर एक-दूसरे धर्म की सुशिक्षाओं को अपनाते हुए विश्व में प्रेम, एकता व सौहार्द की स्थापना का प्रण लें।

इस अवसर पर हिमाचल संत समाज के अध्यक्ष संत कृपाल सिंह, प्रोफेसर कृष्ण मोहन पांडे महासचिव सर्व धर्म महासभा हिमाचल, यशपाल ठाकुर हिमोत्कर्ष संस्था के अध्यक्ष, पादरी सैगरीन, सद्भावना कमेटी होशियारपुर के संयोजक अनुराग सूद, स्वामी सूरज प्रकाश, संत बाबा अमरीक सिंह सहित अन्य गणमान्य भी उपस्थित थे।

(रफीक़ अहमद मुअल्लिम सिलसिला हिमाचल)

122 वां जलसा सालाना कादियान

(जलसा सालाना कादियान के आरम्भ पर 125वां साल)

सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 122वें जलसा सालना कादियान के लिए दिनांक 26.27.और 28(सोमवार, मंगलवार बुधवार) की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसा में शामिल होने के लिए तैय्यारी शुरु कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस इलाही जलसा से लाभांवित होने की तौफीक प्रदान करे। इस जलसा के प्रत्येक दृष्टि से सफल होने के लिए और नेक रूहूं के लिए हिदायत का कारण बनने के लिए दुआँए जारी रखें। जज़ाकमुल्लाह अहसनल जज़ा।

(नाज़िर इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया, कादियान)

ख़िलाफ़त का फ़ैज़ान

ख़ुदा का यह इहसान है हम पै भारी
कि जिसने है अपनी यह नेमत उतारी
न मायूस होना घुटन हो न तारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फैज़ान जारी

नबुव्वत के हाथों जो पौदा लगा है
ख़िलाफ़त के साए में फूला-फला है
यह करती है इस बाग़ की आबयारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फैज़ान जारी

ख़िलाफ़त से कोई भी टक्कर जो लेगा
वह ज़िल्लत की गहराई में जा गिरेगा
ख़ुदा की यह सुन्नत अज़ल से है जारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फैज़ान जारी

ख़ुदा का है वादा ख़िलाफ़त रहेगी
ये ने'मत तुम्हें ताक़यामत मिलेगी
मगर शर्त इसकी इताअत गुज़ारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फैज़ान जारी

मुहब्बत के जज़्बे वफ़ा का क़रीन:
उख़ुव्वत की ने'मत तरक्क़ी का ज़ीन:
ख़िलाफ़त से ही बरकतें हैं ये सारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फैज़ान जारी

इलाही हमें तू फ़िरासत अता कर
ख़िलाफ़त से गहरी मुहब्बत अता कर
हमें दुख न दे कोई लग़्ज़िश हमारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फैज़ान जारी

(मुहतरिमा साहिबज़ादी अमतुल क़ुद्दूस बेगम साहिबा)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad